प्रथम अध्याय

देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

डॉ.देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व ---

१.१ व्यक्तित्व :

हिन्दी के बहुचर्चित, प्रगतिशील सम्मीक्षक एवं कथाकार देवेश ठाकुर जी का जन्म २३ जुलाई १९३३ ई.को उत्तर प्रदेश के अल्मोडा जिले के पैठानी नामक गाँव में हुआ । इनके पिताजी का गाँव 'दाहीम' था । लेकिन नौकरी और आर्थिक तंगी के कारण इनका गाँव आना-जाना लगभग बन्द हो गया ।देवेश जी को घर में 'मुन्ना' नाम से पुकारा जाता था । इनके जन्म के समय पिताजी पहाडी प्रदेश बन्द्रीनाथ में पुलिस की नौकरी में तैनात थे । बद्रीनाथ के दरबार में बच्चे के जन्म की खबर मिलने के कारण उन्होंने इनका नाम 'दरबार सिंह' रखा । इनके मामा ने उनका नाम 'दलजितसिंह' रखा था । पिताजी पुलिस की नौकरी में होने के कारण उनका तबादला होता रहता था, इसीलिए देवेश और उनकी माँ कुछ वर्षोंतक मामा के गाँव में ही रहें । वही बटुलिया स्कूल में इनकी शिक्षा का आरम्भ हुआ । दूसरी तक की पढाई वहाँ हुयी । बाद में इनकी आरम्भिक शिक्षा पैठानी के साथ-साथ नजीबाबाद में हुई । हायस्कूल की परीक्षा पास करने के बाद आगे की पढाई के लिए नगीना चले गए । दसवी कक्षा तक देवेश जी को पिताजी के साथ रानीखेत, बिजनौर,नजीबाबाद,पौडी,जोशीमठ, कर्ण-प्रयाग,श्रीनगर (गढ़वाल) चाँदपुर आदि स्थानों में घुमना पडा ।

बचपन में इनको दूसरों की सही नकल उतारने और कुश्ती लड़ने का शौक

था । साथ में मामा के गाँव (ननिहाल) में मामा-मामी के साथ खेत में हल चलाना, मछलियाँ पकड़ना, जंगल में लकड़ियाँ इकट्ठी करना, पतंग उड़ाना आदि शौक भी थे । पिता पुलिस में होने से घर में भी पुलिस मैन की तरह व्यवहार करते थे । सभीपर उनका अंकुश रहता था । उनकी माँ सीधी-सादी और भोली औरत थी । अपने पूरे परिवार के प्रति देवेश जी के मन में स्नेह था पिताजी के प्रति श्रध्दा, माँ के प्रति स्नेह भाव और भाई-बहनों के प्रति प्यार था । पिताजी इन्हें घर की आर्थिक तंगी के कारण फौज में भरती करवाना चाहते थे । अवकाश प्राप्त होनेपर पिताजी देवेश जी को परिवार का उत्तर-दायित्व निभाने की याद देते हैं । तब उन्होंने पिताजी से कहा कि - "पिताजी आपने मुझे इतना पढा दिया है, इसके लिए मैं आभारी हूँ । किन्तु मैं आगे पढना चाहता हूँ । घर की परिस्थितियों से मैं परिचित हूँ । इसलिए आगे की पढाई मैं अपने पैरों पर खडा होकर करूँगा - आपके ऊपर उसका भार नहीं डालूँगा । रही परिवार के प्रति मेरे कर्तव्य एवं दायित्व की बात, उसे मैं स्वंय महसूस करता हूँ । आप निश्चिन्त रहें, इसके लिए आपको दुबारा याद दिलाने की आवश्यक्ता नहीं पडेगी ।" [१]

देवेश जी जब बारहवी में पढते थे तब उन्होंने सर्व प्रथम 'इन्सान की मौत' नामक एकांकी नाटक लिखा । इन्हीं दिनों कुछ गद्य काव्य के साथ 'चमकीले पत्थर' नामक कहानी लिखी । इन्होंने अपना लेखन कविता से शुरु किया और अपना नाम बदलकर 'देवेश ठाकुर' रखा । बाद में जब वे एम.ए.करने के बाद डिफेन्स के ऑडिट विभाग में बम्बई आये तो उन्होंने कानूनी रूप से अपना नाम 'देवेश ठाकुर' करवा लिया । इस बारे में उन्होंने अपने मित्र सुदेश को लिखा था - "अब मैं सिर्फ देवेश ठाकुर हूँ । इस नाम को मुझे साहित्य में उठाना है । चाहे उसके लिए मुझे कितनी भी साधना क्यों न करनी पडे ।" [२]

नगीना में बारहवी तक की पढ़ाई प्राप्त करने के बाद बी.ए.और एम.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए देहरादून गए । इनके घर की आर्थिक हालत कमी

अच्छी नहीं रही । अत: पढ़ाई के लिए अर्थाभाव,पारिवारिक दायित्व,मध्यवर्गीय नैतिक मानसिकता आदि से किशोरावस्था (नवी कक्षा) से उन्हें कड़ा संघर्ष करना पड़ा । इसके लिए उन्हें ट्युशन्स लेना,प्राइवेट शिक्षा संस्थाओं अध्यापन करना,ढाबेनुमा होटल में काम करना,साइकील स्टेन्ड पर काम करना,पेपर बाँटना, ईंटों की भट्टी पर काम करना पड़ा । किसी भी कार्य को करने में इन्होंने कभी संकोच नहीं किया । कभी-कभी इनको समयपर भोजन भी नहीं मिलता था । उन्हें कभी-कभी तीन-चार दिन भूखे रहकर मूँगफली के छिलकों से गुजारा करना पड़ा । इतने सारे संघर्षों के बावजूद इन्होंने बड़े परिश्रम,अध्यवसाय,महत्वाकांक्षा और लगन से हिन्दी में एम.ए.किया । मूलत:वे राजनीति के अच्छे छात्र थे ।

कॉलेज की पढ़ाई के समय देहरादून में कॉलेज के नजदिक वे एक बंगाली मुहल्ले में रहते थे । उन्होंने स्टुडन्स फेडरेशन में सक्रिय भाग लेकर अपने मित्र दिनेश कुकरेनी को सचिव के रूप में सफलता दिलाई थी । इसी मुहल्ले में उन्होंने ' तरूण साहित्य मण्डल ' की स्थापना की थी, जिसमें वें साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन किया करते थे । यहाँ उनका कवि मन जागृत होकर उन्होंने कविताएँ लिखना आरम्भ किया । इनकी कविताओंपर बच्चन,नीरज,हंसकुमार तिवारी आदि कवियों का प्रभाव था । सन १९५४ से १९५८ ई.तक इनके दो रोमान्टिक काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए । एक लड़की से उनका प्रेम सम्बन्ध भी था,जो बहुत अच्छा गाती थी और उसकी लिखावट बहुत सुन्दर और कलात्मक थी । एक पंक्ति जो वें हमेशा गुनगुनाते रहते थे, वह थी ,"तुम गा दो,मेरा गीत अमर हो जायें।"[3] इस पंक्ति की 'तुम ' उनकी प्रेमिका ही थी । उस लड़की से सम्बन्ध टूटने के बाद इनका कविता करना भी छूट गया । बच्चन को वे रूमानी कवि कहते थे । प्रसादजी की 'कामायनी ' से वे काफी सन्तुष्ट थे ।

पिताजी अवकाश प्राप्त होनेपर माता-पिता,भाई-बहनों की जिम्मेदारी देवेश जी पर आ पड़ी । उन्होंने मेहनत,ईमानदारी और लगन के साथ एम.ए. किया । उन्होंने नजीबाबाद में प्राईवेट स्कूल में ४० रु.माहवार पर हेडमास्टरी की

और साथ में स्कूल के प्रबन्धक के घर का काम भी किया । बाद में नजीबाबाद के पास ही एक गाँव के स्कूल में ६० रु.माहवार पर उनकी नियुक्ति हो गयी । किन्तु इन्हें पढ़ाना नही आता इस आरोप के साथ उनकी छुट्टी कर दी गई । इस अपमान से आहत होकर उन्होंने आत्महत्या का भी विचार किया था,किन्तु छोटे-छोटे भाई - बहनों की जिम्मेदारी को याद कर अपने निर्णय को बदल दिया । कुछ दिनों बाद बम्बई में सरकारी प्रतिरक्षा विभाग में नौकरी मिली । बम्बई में सरकारी क्लर्क की नौकरी करते समय भी इनका साहित्य प्रेम कतई कम नही हुआ । जीवन की द्वंन्द्वात्मक अस्थिरता के कारण इस नौकरी से इस्तिफा दे दिया और देहरादून जाकर बी.एड. करने का निश्चय किया । बम्बई से देहरादून वापस जाकर बी.एड.में प्रवेश ले लिया और खर्चे के लिए ट्यूशने लेनी शुरु की । मित्रों की सहायता से दिन काटने लगे थे कि बम्बई के सरकारी कॉलेज में इण्टरव्यू के लिए बुलावा आया । दोस्तों से पैसे लेकर वे फिर बम्बई पहुँचे और इण्टरव्यू देकर वापस देहरादून आ गये ।

देवेश जी की बम्बई के सिडन्हम कॉलेज में नियुक्ति हो गयी । आग्रीपाडा-स्थित शेरे-पंजाब होटल में रहकर अध्यापकीय जीवन की शुरुवात की । यही से उनका महानगरीय जीवन प्रारम्भ हो गया । इसी प्रसंग से उनके आत्मकथात्मक प्रथम उपन्यास 'मुर्दाघर' का आरम्भ होता है । तीन-चार बरसों बाद उनका तबादला राजकोट (गुजरात) के धर्मेन्द्रसिंहजी कॉलेज में हुआ । वहाँ जाने के बदले देवेशजी नौकरी से इस्तिफा देना चाहते थे,परन्तु मित्र तथा सहयोगी अध्यापकों के आग्रह के कारण राजकोट गये ,चार-छ महिनों तक वहाँ रहे और अन्त में सरकारी कॉलेज की नौकरी छोडकर बम्बई चले आये । बम्बई आनेपर वे रामनारायण रुईया कॉलेज में लेक्चरर पद पर नियुक्त हो गये । वहाँ हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में काम करते रहें । जुलाई १९९३ को सेवानिवृत्त होकर वर्तमान में एक नए हिन्दी साप्ताहिक के कार्यालय में कार्यरत हैं ।

देवेश जी का विवाह सुशीला डंग के साथ मेरठ में १२ अक्टुबर १९६१ को आर्य समाजी पध्दति से हुआ । सुशीला जी लेडी हार्डिंग्ज अस्पताल,दिल्ली में

सिस्टर-इन-चार्ज थी । सुशीला के भाई सत्यपाल डंग भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के नेता थे । विवाह के समय देवश जी को अपनी पत्नी की जाति भी मालूम नहीं थी । डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पूछने पर उन्होंने पत्नी से पूछकर द्विवेदी जी को बताया । विवाह में देवेश जी के मित्र सुदेश,दिनेश,पिताजी और बहन के अलावा कोई नहीं थे । विवाह सीधे-सादे ढंग से हुआ । उनको एक सहज,सन्तुलित, शालीन तथा सुशील पत्नी मिली है । वह उनकी पत्नी भी है,प्रेमिका भी है, दोस्त भी है,माँ और बहन भी है । देवेश जी की दो सुन्दर सुशील कन्याएँ है । वे बेटा और बेटी में फर्क नहीं मानते । उनकी बड़ी बेटी आभा एम.डी.और डी.एन.बी.है,उसकी शादी एक मेधावी सर्जन संजय से हो चुकी है । दूसरी बेटी आरती अर्थशास्त्र में एम.ए.है । वह एक स्थानीय कॉलेज में अध्यापक है । उसका विवाह आंध्र प्रदेश के एक नवयुवक इंजिनियर वाय.प्रसाद से हो चुका है ।

अर्थाभाव के कारण परिवार की जिम्मेदारी निभाने के लिए उन्होंने अपनी पत्नी को नौकरी के लिए मजबूर किया । उन्होंने दो रूपये पन्ने के हिसाब से 'घोस्ट राइटिंग' भी की । बहन को नौकरी दिलवा दी । बहन का कमाऊ होने का दर्प,स्वार्थी वृत्ति,बिगड़ैल भाई की हरकतों तथा माँ द्वारा उनका ही पक्ष समर्थन करने की प्रवृत्ति आदि के कारण वे अत्यन्त घनी मानसिक पीड़ा भोगने लगे और जैसा कि स्वाभाविक था उन्हे सन १९७० में पहली बार दिल का दौरा पड़ा । तब उन्होंने परिवार से सम्बन्ध विच्छेद किया ।

देवेश जी के बाल्यकाल के मित्र सुदेश और दिनेश के मतानुसार वह लम्बा, पतला,छरहरा,गेहुआ रंग,दुर्बल देह,झुके-झुके कन्धे चेहरे पर अबोधता और अधैर्य घुले-मिले छलकते थे ,बहुत चंचल और बहुत शरारती हुआ करता था । वे दूसरों की हर मुद्रा की नकल उतार लेते थे । शरीर में सिर्फ हड्डिया दिखाई देने पर भी उन्हें अखाड़े का शौक था । आज बिखरेबालों और बढ़ी हुयी श्वेत-शाम दाढ़ी से गम्भीर बना हुआ-सा उनका चेहरा होठों के बीच दबा हुआ पाईप और आँखों पर

मोटे फ्रेम का चश्मा चढा हुआ है। उनके स्वभाव में फक्कडता सरलता, निष्कपटता, ईमानदारी के साथ आत्मविश्वास की चमक दिखाई देती है। अपनी सभी अच्छाईयों और बुराइयों को नि:संकोच रूप में वे स्पष्ट करते हैं।

देवेशजी की पोशाख सादी-सरल-साफ और हल्के रंग के खद्दर का कुर्ता-पॅन्ट होती हैं। सुशीला ठाकुर उनके बारे में कहती हैं -" रहन-सहन में भी यही अनियमितता है। कभी बिल्कुल फक्कड बने रहेंगे, ऐसे कपडे पहनेंगे कि कोई कहेगा, इनके पास ढंग के कपडे ही नहीं है। कभी इतने ठाठ से बाहर निकलेंगे कि लोग देखते रहे जायें [४]।" कुर्ते के कपडे की बुनावट, रंग, काट-छाट, चप्पल आदि के चुनाव में उनकी कलात्मक पसंद दिखाई देती है। उनके कमरे में किताबें, कपडे, चप्पल, डायरी, पेन, फोन ,फर्नीचर, पैंटिंजआदि सभी चीजे करीने से रखी हुयी दिखाई देती है। देवेश जी प्राय: फर्शपर बैठकर लिखते हैं। एक छोटी-सी तिपाईपर उनकी लेखन सामग्री सजी-सँवरी होती है। उनके मित्रों में टैक्सी ड्रायवर, गेटकीपर, मिलों में काम करनेवाले मजदूर, बैंक के अधिकारी, उद्योगपति, लेखक, सम्पादक आदि होते हैं। सामिष भोजन उन्हें प्रिय हैं। केला और चीकू मनपसन्द फल है। पान खाना, पाइप पीना इन्हें अच्छा लगता हैं। पुस्तके खरीदना, सागर किनारे घूमना, पौधे लगाना, लव बर्डस पालना, संगीत सुनना आदि बातें इनकी मन पसन्द है। अवकाश के दिनों में पहाडोंपर जाना, यात्राएँ करना सडकोंपर घुमना इन्हें अच्छा लगता हैं।

देवेश जी सीधे-सरल, निश्चल और भावुक व्यक्ति हैं, अँग्रेजी में जिसे 'सैंटिमेन्टल' अथवा 'टची' कहा जा सकता है। स्नेही, सदाशयी, उदारता इनके और गुण हैं। भावुकता उनमें इतनी है कि बात करते-करते उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। अपनी कमजोरियों को वे स्वीकार करते हैं। दिन-रात ईमानदारी के साथ मेहनत करके ही देवेश अपने मित्र दिनेश को स्टूडेंट कौन्सिल का महासचिव बनाने में सफल रहे। देवेश जी में स्वाभिमान इतना है कि आर्थिक अभावों का सामना करते समय भी उन्होंने अपने स्वाभिमान को बनाये रखा है। होटल में काम किया वह भी स्वाभिमान के साथ। उन्होंने स्वाभिमान को कहीं भी नहीं गँवाया है।

देवेश जी को अपनी स्पष्टवादिता के कारण अनेकों से दुश्मनी मोल लेनी पडी है। वे किसी का उधार रखना नहीं चाहते। उनकी स्पष्टवादिता को लोग अतिवादिता मानते हैं। जितेन्द्रसिंह के अनुसार -"देवेश सचमुच बहुत अतिवादी है, प्यार करने में भी और घृणा करने में भी। प्यार करेगा तो अपना सब कुछ लुटा देगा, घृणा करेगा तो भी पूरी शिद्दत और ईमानदारी के साथ करेगा।"[५] मुँहफट और फक्कड इनकी और एक स्वभावगत विशेषता है। लेकिन बेईमानीने उन्हें छुआ तक नहीं है। मुँहफट स्वभाव के कारण उनके दोस्त उन्हें बहुत चाहते हैं और दुश्मन बहुत नफरत करते हैं। देवेश खुले मनवाले निष्कपट व्यक्ति है। "मैं सीधा-सादा अक्खड पहाडी आदमी हूँ और चारित्रिक विसंगतियों और मुखौटे-बाजी से घृणा करता हूँ।"[६] देवेश जी संयमी, दृढ निश्चयी, आस्थावान और आत्मविश्वासी हैं। सरकारी प्रतिरक्षा विभाग की नौकरी छोडकर अध्यापक बनने का उनका निश्चय दृढ रहा है।

देवेश जी में आत्मविश्वास है और महत्वाकांक्षा भी। जिस काम को वे शुरु करते हैं उसे किसी भी हालत में दूर तक ले जाते हैं। देवेश जी ने जितेन्द्र को लिखा था -"जितेन्द्र मैं ऐसा यात्री हूँ, जिसके मन में हिमालय के शिखरतक पहुँच जाने की महत्वाकांक्षा है लेकिन जिसके पैर लुले हैं और शरीर नंगा है।"[७] देवेश जी किसी भी काम को छोटा नहीं मानते हैं। कार्यक्षम वृत्ति के कारण ही वे आज एक उच्च स्थान प्राप्त कर गये हैं। वे संघर्षशील है, अर्थाभाव, साधनों का अभाव होते हुये भी आनेवाले सकटों का उन्होंने डटकर मुकाबला किया है। संघर्ष और परिश्रम करने का मूल कारण समाज को कुछ रचनात्मक देने की महत्वाकांक्षा ही है। देवेश जी में निर्णय लेने की क्षमता उनके प्रतिरक्षा विभाग की सरकारी नौकरी से इस्तिफा देने और बी.एड.करने समय तथा घरवालों की तुच्छी मनोवृत्ती से त्रस्त होनेपर उन्हें दिल का दौरा पडा तब उन्होंने परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करते समय दिखाई देती है। देवेश जी जोखिमप्रिय हैं, नंदी में थे तब पिताजी अवकाशप्राप्त हो गये तब से इन्होंने पूरे परिवार की जोखिम अपने ऊपर लेकर पूरी तत्परता से निभायी है।

देवेश जी जिंदादिल दोस्त तथा सच्चे मित्र हैं। सुशील ठाकुर उनके बारे में कहती हैं -"देबू बाहर से बहुत फक्कड, (अब मैं फक्कड का अर्थ समझ गयी हूँ) लापरवाह और जिंदादिल दिखाई देते हैं। लेकिन भीतर वे उतने ही गंभीर, व्यवस्थित और अनुशासन प्रिय हैं।"[८] उनके सभी दोस्त एक-दूसरे की मदत करने में हमेशा तत्पर हैं। पढाई के दिनों में उनके मित्रोंने देवेश जी को पैसे दिये, किसी ने कपडे दिये, टयुशन्स दिलाने की कोशिशें की। इसीलिए देवश जी कहते हैं- "एक ओर इस तरह के छोटे-छोटे अभाव थे और दूसरी ओर सहयोगी मित्रों की लम्बी कतार थी, जो बहुत ईमानदार सच्चे और संवेदनशील थे।"[९] देवेश जी किसी के साथ दोस्ती करते हैं तो पूरी ईमानदारी के साथ करते हैं। इसी कारण उनके दोस्तों में रिक्शा ड्रायवर से लेकर सरकारी उच्च अधिकारियों तक सभी प्रकार के लोग होते हैं।

देवेश जी के स्वभाव में व्यवस्था प्रियता तथा सुरुचि है। अन्य लेखकों जैसी अव्यवस्था नहीं है। पुस्तक प्रेमी होने के कारण अर्थाभाव में भी वे अन्य आवश्यक चीजों के बदले पुस्तकें खरीदना पसंद करते हैं। वे कहते हैं-"अगर आज दो जोडी कपडे और चार किताबें भी अपने पास हैं, तो वह अपनी उपलब्धि ही है। मुझ जैसा आदमी कभी नुकसान में रह ही नहीं सकता।"[१०] आज उनका निवास अन्य चीजों के बदले पुस्तकों से भर गया है। इस अमूल्य सम्पत्ति को वे बहुत करीने से सहजकर रखते हैं। हिन्दी में छपनेवाली बहुतसी पत्रिकायें उनके पास आती हैं। व्यवस्थाप्रियता के कारण नई और पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ करीने के साथ यथास्थान होती है। लेख, पाण्डुलिपियाँ, लाल-नीले-हरे पेन, पेन्सिलों की पंक्तियाँ, पत्र-व्यवहार, लोगों के पत्ते, फोन नंबर सब अक्षर-क्रम से डायरी में नोट किए हुए मेज पर मिलते है। पैसे से उन्हें कभी-भी मोह नहीं रहा है, न पैसे की कमी के कारण उन्होंने खुद को छोटा महसूस किया है। देवश जी कहते हैं ' पैसे ने मुझे कभी भयभीत नहीं किया। पैसेवालों के सामने मैंने अपने को कभी छोटा महसूस नहीं किया। मैं छोटा वहाँ महसूस करता हूँ जहाँ कोई महान व्यक्तित्व मेरे सामने आ खडा होता है।"[११]

१.१.१ निष्कर्ष --

डॉ.देवेश ठाकुर जी के जीवन-चरित्र और व्यक्तित्व को देखकर कहा जा सकता है वे मार्क्सवादी लेखक न होकर प्रगतिशील और मानवीय लेखक हैं। जैसा कि उनपर,मार्क्सवादी होने का आरोप किया जाता है। जयप्रकाश जी में उनकी आस्था थी किन्तु तिलक,सुभाष और क्रान्तिकारी इन्हे अधिक प्रिय थे। कविता की दृष्टि से प्रारंभ में बच्चन,नीरज और हंसकुमार तिवारी का इनपर प्रभाव था। प्रसाद जी की 'कामायनी' इनका प्रिय ग्रंथ रहा है। उनके अन्तर-बाह्य व्यक्तित्व को देखकर लगता है - देवेश जी सीधे-सादे,सरल भावुक तथा संवेदनशील,अध्यवसायी,संघर्षशील, दृढ निश्चयी,महत्वाकांक्षी,प्रगतिकामी,शिष्य वत्सल,हंसमुख व्यक्ति और जिन्दा-दिल दोस्त हैं। स्पष्टता,ईमानदारी,स्वाभिमान और कबीर जैसी फक्कड़ता इनके व्यक्तित्व में हमेशा वास करती है। वे दिल से स्पष्टवादी,खूब पढनेवाले, व्यवस्थाप्रिय,आस्थावान हैं। वे शरीर से दुबले-पतले छरहरे और लम्बे हैं। झुके हुये कन्धे,बिखरे बाल,श्वेतश्याम दाढी,मुख में पाईप और आँखोंपर मोटी फ्रेम के चश्मे में चेहरा गंभीर नजर आता है। आजकल वे कुर्ते-पैन्ट के साथ जीन पैन्ट तथा रंगीन शर्टस पहनना भी पसंद करते हैं। उनका चेहरा हमेशा हंसमुख दिखता है। ठहाके लगाकर हँसना उनके व्यक्तित्व की और एक खुबी है। देवेश जी व्यवस्था को महत्व देते हैं। उनकी सौन्दर्य दृष्टि कलात्मक अभिरुचि और व्यवस्था प्रियता पाठक को भा जाती है।

१.२ कृतित्व --

हिन्दी साहित्य में रचनाधर्मी साहित्यकार और प्रगतिशील समीक्षक के रूप में डॉ.देवेश ठाकुर जी का नाम अपना विशेष स्थान रखता है। अपनी साहित्य - रचना के कार्य में साहित्य गुरू के बारे में वे कहते हैं --"मेरे अनुभव ही मेरे साहित्यिक गुरू हैं। वैसे गंभीर अध्ययन करने की प्रेरणा मुझे आचार्य नंददुलारे वाजपेयी से तब मिली जब मैं उनके निर्देशन में पीएच.डी.के लिए शोधकार्य कर रहा

था । वही डॉ.मानुदेव शुक्ल और डॉ.प्रेमशंकर ने मुझे लिखने-पढने की प्रेरणा दी । उपरान्त डॉ.मगीरथ मिश्र के निर्देशन में डी.लिट.के लिए अध्ययन करते समय मुझे व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने की दिशा मिली । वैसे मैं यद्यपि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का भी विद्यार्थी नहीं रहा, लेकिन उनके लेखन व चिन्तन में मैंने हमेशा अपने भावों की प्रतिच्छाया देखी है । यदि मुझे किसी को अपना साहित्यिक गुरू कहना ही पडे तो मैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का नाम ही लेना चाहूँगा यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से मैं उनका विद्यार्थी कभी नहीं रहा ।" १२

देवेश जी ने छात्रावस्था से ही लिखना प्रारंभ किया था । पिछले २० वर्षों से वे लेखन कार्य में जुटे रहे हैं । प्रथम उन्होंने ' इन्सान की मौत ' नामक एकांकी लिखा जो नजीबाबाद में हजारों लोगों के सामने खेला गया । बाद में सन १९५४ तथा १९५७ में ' मयुरिका ' एवं ' अन्तर छाया ' काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए । उपरान्त बाल साहित्य, ३०-३५ कहानियाँ,९ बहुचर्चित उपन्यास, १० शोध एवं समीक्षा ग्रन्थ, कथाक्रम भाग-१ व २ एवं ८ कथा वर्षों के सम्पादन के साथ-साथ कतिपय कॉलेजोपयोगी ग्रंथों का भी लेखन किया है । १५०० से अधिक पुस्तक समीक्षाएँ भी लिखी हैं । अब तक इनकी ४२ किताबें प्रसिध्द हो चुकी है । देहरादून के डी.ए.वी.कॉलेज से सन १९५५ में एम.ए. करने के बाद इन्होंने १९६१ में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी के निर्देशन में सागर विश्वविद्यालय से पीएच.डी.उपाधि प्राप्त की । सन १९७१ में डॉ.मगीरथ मिश्र जी के निर्देशन में लिखे शोध प्रबन्ध ' आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ ' पर इन्हे डी.लिट. की उपाधि प्राप्त हुई । सन १९७५ में इसी ग्रंथपर इन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ' तुलसी पुरस्कार ' से सम्मानित किया गया है । डॉ.मगीरथ मिश्र, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी और डॉ.मानुदेव शुक्ल आदि इन्हें साहित्य में प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहे किन्तु साहित्यिक गुरू वे डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को ही मानते हैं । उपन्यासकार यशपाल और समीक्षा के क्षेत्र में डॉ.रामविलास शर्मा इन्हें प्रिय है । देवेश जी ने बचपन से ही अभावों

और संघर्षों को सिर्फ देखा ही नहीं, उन्हें अत्यन्त गहराई से जिया भी है। इसीलिए उनके सभी साहित्य में प्रगतिशीलता तथा वस्तुपरकता दिखाई देती है। उनका कृतित्व निम्नलिखित है --

१.२.१ एकांकी : इन्सान की मौत

१.२.२ प्रथम लघु-उपन्यास : चमकीले पत्थर

१.२.३ कविता

१.२.३.१ मयुरिका

१.२.३.२ अन्तर छाया

१.२.४ बाल-साहित्य

१.२.४.१ ममता (उपन्यास)

१.२.४.२ दो सहेलियाँ (कहानियाँ)

१.२.५ कॉलेजोपयोगी साहित्य

१.२.५.१ कॉलेज निबन्ध और रचना

१.२.५.२ हिन्दी निबन्ध प्रदीप

१.२.५.३ व्यवहार वीथिका

१.२.६ कहानी

१.२.६.१ सोच

१.२.६.२ पहली शाम

१.२.६.३ सिलसिला

१.२.६.४ सिर्फ संवाद

१.२.६.५ अब यह भी नहीं

१.२.६.६ और सुन

१.२.६.७ बेगानी शादी में

१.२.६.८ सम्बन्ध

१.२.६.९ कहानी नहीं

१.२.७ उपन्यास

१.२.७.१ मुर्दाघर

१.२.७.२ प्रिय शबनम

१.२.७.३ काँचघर

१.२.७.४ इसीलिए

१.२.७.५ अपना-अपना आकाश

१.२.७.६ जनगाथा

१.२.७.७ गुरुकुल

१.२.७.८ शून्य से शिखर तक

१.२.७.९ अन्ततः

१.२.८ शोध और समीक्षा

१.२.८.१ शोध

१.२.८.१.१ प्रसाद के नारी पात्र

१.२.८.१.२ आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ

१.२.८.१.३ हिन्दी की पहली कहानी

१.२.८.२ समीक्षा

१.२.८.२.१ नयी कविता के सात अध्याय

१.२.८.२.२ 'नदी के द्वीप' की रचना - प्रक्रिया

१.२.८.२.३ 'मैला आँचल' की रचना - प्रक्रिया

१.२.८.२.४ हिन्दी कहानी का विकास

१.२.८.२.५ साहित्य के मूल्य

१.२.८.२.६ साहित्य की सामाजिक भूमिका

१.२.८.२.७ आलेख

१.२.९ सम्पादन कार्य ।

हिन्दी के प्रतिथयश लेखक और मूर्धन्य आलोचक देवेश ठाकुर जी ने अपनी रचनाधर्मिता के साथ-साथ सम्पादन कार्य को भी सफलता के साथ निभाया है। सम्पादन कार्य उनकी मनपसन्द कला बन गयी है। कथाक्रम भाग-१ (स्वाधीनता के पहले की कहानियाँ) और कथाक्रम भाग-२ (स्वाधीनता के बाद की कहानियाँ) में क्रमश: १०७ और ६८ कहानियाँ संकलित की गयी है। लेखक ने विभिन्न संस्कारों, परिवेशों और कार्यक्षेत्रों से आये हिन्दी लेखक को प्रतिनिधित्व दिया है। विभिन्न कथा आंदोलनों प्रवृत्तियों, स्थितियों तथा समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है। दोनों कथाक्रमों की भूमिकाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण बन पडी है।

कथावर्ष - १९७६, १९७७, १९७८, १९७९, १९८०, १९८१, १९८२ , १९८३ के रूप में उनके ८ संकलन प्रकाशित हो चुके है। समीचीन कथावर्ष १९९३, रचना-प्रक्रिया और रचनाकार, हिन्दी की पहली कहानी, प्रेमचंद साहित्य के अध्येता: डॉ.कमल किशोर गोयनका तथा देवेश ठाकुर रचनावली - १ ते ७ खण्ड भी सम्पादित हो चुके है। इनके अतिरिक्त देवेश ठाकुर की समीक्षा दृष्टि ' सारिका ' में लगातार दो वर्षों तक लिखी गयी पुस्तक समीक्षाओं, अन्य अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी लम्बी समीक्षात्मक टिप्पणियों तथा अनेक लेखों में देखी जा सकती है।

इस प्रकार अध्यापकीय दृष्टिकोण से उन्होंने समीक्षा यात्रा प्रारंभ की थी। अब वे वस्तुपरक, समीक्षात्मक दृष्टि से सम्पन्न है और उनकी संकल्पशक्ति अध्ययन और अनुशीलन उन्हें हिन्दी का एक सफल महत्वपूर्ण समीक्षक बना दिया है। " इससे उनके रचना - धर्मी व्यक्तित्व, मानवीय और स्पष्ट प्रगतिशील दृष्टि तथा शिल्पगत सौष्ठव का स्वरूप सुधी पाठकों के सम्मुख स्पष्ट हो जाएगा ऐसा हमारा विश्वास है।" १३

१.२.१० <u>निष्कर्ष</u> ---

डॉ.देवेश ठाकुर जी ने १९४५ से अबतक लगभग ३८ वर्षों से अध्यापकीय

पेशा करते-करते हिन्दी साहित्य के भंडार में ४२ कृतियों का योग दिया है। जीवन की अनुभूतियों को अपने साहित्य में चित्रित करने में वे सफल रहे हैं। देवेश जी की प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने कविता से लिखना प्रारंभ किया। कहानी, उपन्यास, कविता, शोध-समीक्षा तथा सम्पादन कार्य आदि विधाओं में लेखन किया। देवेश जी उदार और फक्कड व्यक्ति, गली-सड़ी रूढ़ि परम्पराओं के प्रगतिशील विचारक, सुदी सम्पादक, बाल साहित्य के प्रणेता, भावुक तथा रोमांटी कवि और सफल रचनाधर्मी उपन्यासकार हैं। वे समाजवादी प्रतिबध्दता से समन्वित लेखक, ईमानदार और व्यवस्थाप्रिय व्यक्ति, सुरुचि सम्पन्न, कलाप्रिय साहित्यिक तथा जिन्दा दिल दोस्त हैं। अपने प्रथम उपन्यास के प्रकाशन होते ही उन्हें साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त हुई। लेकिन गुटबाज समीक्षकों ने उनके कृतित्व की उपेक्षा की। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त संघर्षशील तथा महत्वाकांक्षी रहा है। उनकी अध्ययनशीलता सहज ईर्ष्या निर्माण करती है। इसी ईर्ष्या के कारण विरोधक उन्हें मार्क्सवादी कहते है। मगर देखने में कम्युनिस्ट लगनेवाले देवेश जी सच्चे रूप में मानवतावादी है। इस प्रकार उनका मानवतावादी व्यक्तित्व तथा दृष्टि सम्पन्न कृतित्व निश्चित रूप में युवकों तथा युवा रचना धर्मियों के लिए प्रेरणादायी रहेगा।

सन्दर्भ

१ सम्पा.डॉ.नंदलाल यादव : देवेश ठाकुर व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार पृ.६ ।

(दिनेश कुकरेती: देवेश : मेरा सह्योगी और सह्भोगी)

२ सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.६ ।

(सुदेश कुमार : एक और देवेश)

३ सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.८ ।

(सुदेश कुमार : एक और देवेश)

४ सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.५१ ।

(सुशीला ठाकुर : देबू एक बिगडैल पति लेकिन जिम्मेदार गृहस्थ)

५ सम्पा. डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.३८ ।

(जिनेन्द्र सिंह :मित्रों के जंगल में एक वृक्ष देवदारू का)

६ डॉ.पी.एस.पाटील : देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य-पृ.३३ ।

(शिवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी.उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

७ सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.४० ।

(जितेन्द्र सिंह : मित्रों के जंगल में एक वृक्ष देवदारू का)

८ सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.४९ ।

(सुशीला ठाकुर : देबू एक बिगडैल पति लेकिन जिम्मेदार गृहस्थ)

९ डॉ.पी.एस.पाटील :देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य -पृ.४३ ।
(शिवाजी विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी.उपाधि के लिए स्वीकृत
शोध-प्रबन्ध)

१० सम्पा.डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.७ ।
(सुदेश कुमार : एक और देवेश)

११ प्रस्तुति - डॉ.मानुदेव शुक्ल : देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में पृ.२२ ।

१२ सम्पा: नन्दलाल यादव : देवेश ठाकुर व्यक्ति,समीक्षक और
कथाकार पृ.४९ ।
[रतीलाल शाहीन : साहित्यिक दृष्टि और भ्रमभंग के दंश]

१३ सम्पा: डॉ.शिवबालन रोहिणी : देवेश ठाकुर रचनावली
भाग-५ पृ.६ ।

१४ सम्पा: डॉ.ब्रजदेव मिश्र : पाण्डुलिपि पृ.२१४ ।
(डॉ.रविन्द्रनाथ मिश्र : समसामायिक नागरी स्त्री-पुरुष
सम्बन्धों की यथार्थ प्रस्तुति: अन्तत: